पाठ 18

लोकमाता : अहिल्याबाई

आइए सीखें - ■देश की महान नारियों का जीवनवृत्त जानना। ■साहस, उदारता, परोपकार, दूरदर्शिता, बुद्धिमत्ता, शौर्य आदि गुणों के मूल्यों को ग्रहण करवाना। ■गद्यांशों का मुखर एवं मौन वाचन। ■शब्दों का शुद्ध उच्चारण। ■उपसर्ग, मुहावरों का वाक्य प्रयोग, लिंग परिवर्तन।

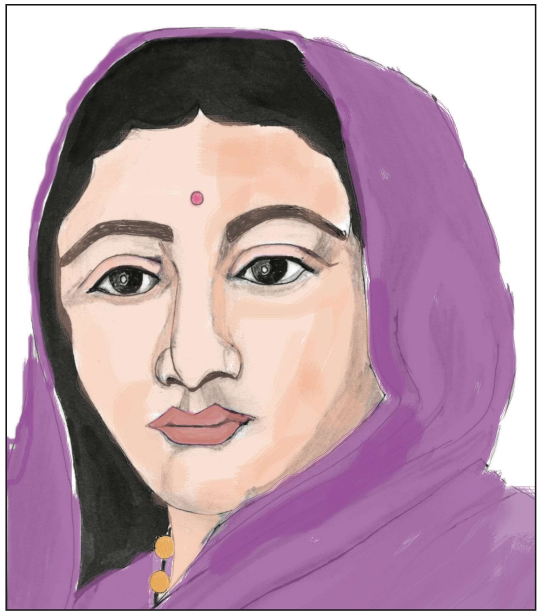

भारत के उत्तर में केदारनाथ, बद्रीनाथ या गंगोत्री के मन्दिर हों या दक्षिण में रामेश्वरम्, पूर्व में जगन्नाथपुरी हो, चाहे पश्चिम में द्वारका और सोमनाथ मन्दिर इन तीर्थ स्थानों में कुछ बातें समान रूप से देखने को मिलती हैं। वे हैं इन्दौर की महारानी अहिल्याबाई द्वारा यात्रियों की सुविधा हेतु बनवाई गई धर्मशालाएँ, मन्दिरों पर स्थापित किए गए कलश, कुएँ, बावड़ियाँ आदि।

अपने धार्मिक कार्यों से सारे भारत को राष्ट्रीय एकता के सूत्र में बाँधने वाली अहिल्याबाई होलकर का जन्म औरंगाबाद जिले के चौंदी गाँव में हुआ था। 29 (उनतीस) वर्ष तक उन्होंने होलकर जैसे विशाल राज्य पर शासन किया। उनके सामने बड़े-बड़े दिग्गजों के छक्के छूट जाते थे। उनके शासन काल में प्रजा सुख-शान्ति और समृद्धि से भरपूर थी। लोग उन्हें लोकमाता कहते थे। उनका जीवन संघर्षों और विपत्तियों से भरा रहा।

महारानी अहिल्याबाई का विवाह मल्हारराव होलकर के पुत्र खाण्डेराव होलकर के साथ हुआ था। गृह कार्य में दक्ष, अहिल्याबाई ने ससुराल में सभी का मन मोह लिया। उनके पति खाण्डेराव बड़े जिद्दी और अक्खड़ स्वभाव के थे, किन्तु अहिल्याबाई ने अपने प्रेम व्यवहार से उनका स्वभाव परिवर्तित कर दिया। अब वे राजकाज में रुचि लेने लगे। मल्हारराव ने अपनी पुत्रवधू अहिल्याबाई की आन्तरिक शक्तियों और क्षमताओं को पहचाना। अहिल्या बाई को उन्होंने अपने बेटे के समान राजनीति और युद्ध कला की शिक्षा दिलाकर पारंगत किया। उन्हें घुड़सवारी सिखलाई, घोड़े पर यात्राओं के लिए भेजा। इससे उन्हें पूरे राज्य की जानकारी हो गई। मल्हारराव सेना प्रमुख होने के नाते अधिकतर युद्ध क्षेत्र में ही रहते। इसीलिए उन्होंने राज्य के कार्यों का भार खाण्डेराव को सौंप दिया। खाण्डेराव वीर व साहसी थे। वे अहिल्याबाई के साथ मिलकर सारा राज-काज संभालने लगे।

अहिल्याबाई ने दो सन्तानों को जन्म दिया। उनके पुत्र का नाम मालेराव एवं पुत्री का नाम मुक्ताबाई

शिक्षण संकेत - ■महारानी अहिल्या बाई के जीवनवृत पर जानकारी दीजिए। ■उनके कार्यों एवं व्यवहार के विषय में कक्षा में चर्चा कीजिए।

था। उस समय उत्तर भारत के राजा मराठों को वार्षिक कर देते थे। भरतपुर के राजा सूरजमल द्वारा कर न देने के कारण मल्हारराव ने भरतपुर पर आक्रमण कर दिया। तीन महीने तक भीषण युद्ध चला इस युद्ध में खाण्डेराव युद्ध का संचालन करते हुए वीरगति को प्राप्त हुए। इस भीषण वज्राघात से आहत अहिल्याबाई के कंधों पर वृद्ध सास-ससुर के साथ-साथ होलकर राज्य का भार भी आ गया। उन्होंने शीघ्र ही जनकल्याण हेतु अपने को संभाल लिया और दुःखी श्वसुर के आँसू पोंछते हुए होलकर राज्य की सेवा का व्रत लिया। अहिल्याबाई ने अभी अपने को संभाला ही था कि उनके श्वसुर मल्हारराव का देहान्त हो गया। मल्हारराव के पश्चात् मालेराव का राजतिलक हुआ। मालेराव क्षीणकाय था। बुखार आने के कारण वह भी चल बसा। अब तो अहिल्याबाई पर दुःखों का पहाड़ ही टूट पड़ा, किन्तु प्रजा हित उनके सामने था अतः दृढ़तापूर्वक उन्होंने होलकर राज्य की बागडोर अपने हाथों में थाम ली।

उनकी शासन व्यवस्था में प्रजा अपने को सुखी अनुभव करने लगी, किन्तु नारी का शासन करना राघोवा को रास न आया। एक दिन राघोवा विशाल सेना लेकर इन्दौर आ पहुँचा। अचानक हुए इस आक्रमण से वीर अहिल्या विचलित नहीं हुई। सुयोग्य राजनीतिज्ञ अहिल्याबाई ने तुकोजी को राघोवा से युद्ध करने भेजा और राघोवा को एक पत्र लिखा - ''आप मेरे पूर्वजों द्वारा अपने कठिन परिश्रम से स्थापित किए हुए होलकर राज्य को हड़प लेने का दिवा स्वप्न मत देखिए, मैं अपनी नारी सेना के साथ आपसे युद्ध करूँगी। आप हारे तो आपको एक नारी द्वारा पराजित होने का अपयश मिलेगा और जीत गए तो एक पुत्र के वियोग से व्यथित विधवा के राज्य को अकारण हड़प लेने की कालिख आपके मुँह पर लगेगी। इस बात पर विचार कर उत्तर दें। मैं अपनी नारी सेना के साथ आपसे युद्ध करने के लिए तैयार हूँ।''

राघोवा महारानी की इस बात से घबरा गया उसने तुरन्त पत्र लिखा - ''बहन! मैं तो आपके पुत्र की मृत्यु पर आपसे संवेदना व्यक्त करने आया हूँ युद्ध करने नहीं।'' अहिल्याबाई ने प्रत्युत्तर में लिखा - आप संवेदना प्रकट करने आए हैं, तो सेना लेकर नहीं, पालकी में बैठकर आइए मैं आपका स्वागत करूँगी। राघोवा स्वयं के बुने जाल में उलझ गया।

अहिल्याबाई की बुद्धिमत्ता और दूरदर्शिता से होलकर राज्य भय से मुक्त हुआ। राघोवा का षड़यंत्र धरा रह गया। वह पालकी में बैठकर महारानी से मिलने पहुँचा। अहिल्याबाई ने उसका खूब आदर-सत्कार किया। रानी की कूटनीति और बुद्धि-चातुर्य तथा साहस को देख लोग 'दाँतों तले अँगुली दबाते' और उनकी भूरि-भूरि प्रशंसा करते।

महारानी अहिल्याबाई युद्ध के पक्ष में नहीं थी। उन्होंने अपने राज्य के विस्तार के लिए कभी युद्ध नहीं किया। पर जब किसी ने उनके राज्य पर आक्रमण किया, तो उन्होंने प्रशिक्षित, सुगठित सेना द्वारा अपने रण-कौशल और बुद्धिमत्ता से उनका वीरतापूर्वक सामना किया और विजय प्राप्त की। उन्होंने कभी किसी के सामने घुटने नहीं टेके।

एक बार रामपुरा के सरदार सौभागसिंह चन्द्रावरा ने विद्रोह कर दिया। उदयपुर के राणा ने उसकी सहायतार्थ विशाल सेना भेजी। मन्दसौर के मैदान में भीषण युद्ध हुआ। अहिल्याबाई ने 63 (तिरेसठ) वर्ष की अवस्था में भी युद्ध का कुशलता से संचालन किया और उदयपुर जैसे शक्तिशाली राजा की सेना के

छक्के छुड़ा दिए। सौभागसिंह पकड़ा गया। अहिल्याबाई के साहस को देखकर लोग दंग रह गए।

अहिल्या बाई ने 'वीर यशवन्त राव फणसे' के साथ अपनी पुत्री का विवाह किया। उसने अपनी वीरता और शौर्य से होलकर राज्य को चोर डाकुओं से मुक्त किया।

लूट-पाट की समस्या होलकर राज्य में रही थी। इस समस्या से निबटने के लिए अहिल्या बाई ने अपने विवेकास्त्र द्वारा भीलों के सरदार को ही यात्रियों की सुरक्षा का दायित्व भार दे दिया और नियम बनाया कि जिस इलाके के यात्रियों से लूटपाट होती है, उसकी भरपाई वहाँ के लोग करेंगे। इस तरह इस समस्या से भी मुक्ति मिल गई और लूट पाट करने वाले सम्मानपूर्वक जीवन- यापन करने लगे। यात्री निर्भय होकर राज्य में विचरण करने लगे।

इस तरह जुझारू व्यक्तित्व की धनी रानी अहिल्याबाई ने अपने वाक् चातुर्य, बुद्धि कौशल से सत्ता का कुशलता पूर्वक संचालन कर जनता को सुखी किया। वह रोज दरबार लगातीं एवं प्रजा की समस्याओं का समाधान करती थीं। वीरगति पाने वाले सैनिकों एवं युद्ध में जाने वाले सैनिक परिवारों की सारी व्यवस्था स्वयं करती। वे कृषकों को सुविधाएँ देतीं। लगान के रूप में कृषि कर लिया जाता, जो बहुत कम होता उसे भी वे जनहित के कार्यों में खर्च कर देतीं। अन्य उद्योग धन्धों को भी उन्होंने बढ़ावा दिया।

महारानी अहिल्याबाई के शासनकाल में बहुमूल्य ग्रन्थों की रचना हुई। उन्हें संस्कृत, मराठी, हिन्दी आदि भाषाओं का ज्ञान था। उन्होंने साहित्यकारों, ज्योतिषियों, कलाकारों को बुलाकर राज्य में बसाया। विद्वानों को वे समय-समय पर पुरस्कृत करतीं।

महारानी अहिल्या बाई का जीवन जनहित की मिसाल है। उन्होंने पूरे भारत वर्ष के **प्रमुख मंदिरों का पुर्ननिर्माण कराया** वास्तुकला के अनुपम उदाहरण हैं। कोई भी जरूरतमन्द व्यक्ति उनके दरबार से निराश नहीं लौटता था। ऐसी साहसी प्रतिभा सम्पन्न महान् नारी भारत के गौरव की प्रतीक हैं।

सादर नमन्।

निम्नलिखित शब्दों के अर्थ शब्दकोश से खोजकर लिखिए -

विद्रोह	-	दायित्व	-	विचरण	-
जनहित	-	दिग्गज	-	छक्के छूटना	-
पारंगत	-	वज्राघात	-	क्षीणकाय	-
विचलित	-	दिवा स्वप्न	-	अपयश	-
प्रत्युत्तर	-	संवेदना	-	दूरदर्शिता	-
कूटनीति	-	दाँतो तले अँगुली दबाना	-		

अभ्यास

बोध प्रश्न

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

(क) अहिल्याबाई को ''लोकमाता'' क्यों कहते हैं?

(ख) मल्हार राव ने अहिल्याबाई को किस राह पर आगे बढ़ाया?

(ग) अहिल्या बाई ने राज्य की बागडोर किन परिस्थितियों में संभाली?

(घ) राघोबा द्वारा आक्रमण किए जाने पर अहिल्याबाई ने क्या किया?

(ङ) सौभाग सिंह कौन था? वह कैसे पकड़ा गया?

(च) लूट-पाट की समस्या अहिल्याबाई ने किस तरह निपटाई?

(छ) ''महारानी अहिल्याबाई का जीवन जनहित की मिसाल है'' - स्पष्ट कीजिए।

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -

(क) यात्री..................होकर राज्य में विचरण करने लगे थे।

(ख) अहिल्या बाई ने 63 वर्ष की अवस्था में युद्ध का..................संचालन किया।

(ग) भारत के मन्दिर...............कला के अनुपम उदाहरण हैं।

भाषा अध्ययन

1. निम्नलिखित शब्दों में से उपसर्ग छाँटकर लिखिए -

प्रशिक्षित, सशरीर, आघात, सुयोग्य, आहत, अपयश, वियोग, विजय, विचरण

2. निम्नलिखित वाक्यों के समक्ष दिए गए विकल्पों में से सही मुहावरों का प्रयोग करके, रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -

(क) अहिल्याबाई के सामने दिग्गजों के.....................थे।

(कालिख लगना, छक्के छूटना, हार नहीं मानना)

(ख) गृहकार्य में दक्ष वधू ने सबका.......................है।

(मन मोह लेना, घुटने टेकना, रास न आना)

(ग) अनैतिक कार्यों की पोल खुलने से व्यक्ति के..........................है।

(मुँह पर रंग लगना, मुँह पर कालिख लगना, मुँह पर छींटे मारना)

(घ) अहिल्याबाई की वीरता की सभी..........................थे।

(भूरि-भूरि प्रशंसा करना, विचलित होना, निन्दा करना)

(ड.) अहिल्या बाई ने राघोवा के सामने..........................थे।

(पैर टेकना, सिर टेकना, घुटने न टेकना)

(च) विदेशी भी भारतीय नारियों की वीरता देखकर.....................।

(आँख मूँद लेते थे, दाँतों तले अँगुली दबा लेते थे, कानों पर हाथ रख लेते थे)

पढ़िए और समझिए -

पुत्र-पुत्री, माता-पिता, सास-ससुर, विधुर-विधवा, महाराज-महारानी, सम्राट-सम्राज्ञी, भील-भीलनी, धावक-धाविका।

यहाँ एक शब्द के साथ दूसरा शब्द अपनी अलग जाति का बोध करा रहा है। जैसा कि -

पुत्र - पुरुष जाति का बोध कराता है।

पुत्री - स्त्री जाति का बोध कराती है।

इसी प्रकार अन्य शब्द भी हैं।

अब ध्यान दीजिए -

प्राणियों, वस्तुओं और मन के भावों से पुरुष जाति अथवा स्त्री जाति का बोध होता है, उसे लिंग कहते हैं।

पुल्लिंग - जिस शब्द से प्राणी, वस्तु अथवा भाव से पुरुष जाति का बोध हो, उसे पुल्लिंग कहते हैं। जैसे - पिता, ससुर, महाराज।

स्त्रीलिंग - जिस शब्द से प्राणी, वस्तु या भाव के स्त्री जाति का बोध हो, उसे स्त्रीलिंग कहते हैं। जैसे - माता, भीलनी, धाविका।

आइए और भी जानिए

विभिन्न शब्दों में लिंग परिवर्तन करने के निम्नलिखित नियम हैं -

	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
(1) 'अ' को 'आ' में बदलकर	छात्र	छात्रा
(2) 'अ' को 'ई' में बदलकर	गोप	गोपी
(3) 'आ' को 'ई' में बदलकर	दादा	दादी
(4) 'आ' को 'इया' में बदलकर	चूहा	चुहिया
(5) 'अक' को 'इका' में बदलकर	बालक	बालिका

(6)	अन्त में 'आनी' लगाकर	देवर	देवरानी
(7)	अन्त में 'नी' लगाकर	भील	भीलनी
(8)	'वान' को 'वती' में बदलकर	गुणवान	गुणवती
(9)	'मान' को 'मती' में बदलकर	श्रीमान्	श्रीमती
(10)	अन्त में 'आइन' लगाकर	पण्डित	पण्डिताइन
(11)	अन्त में 'इन' लगाकर	बाघ	बाघिन
(12)	'ता' का 'त्री' करके	दाता	दात्री

4. निम्नलिखित शब्दों के स्त्रीलिंग रूप लिखिए -

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
शीलवान	....
बुद्धिमान	....
सुत	....
घोड़ा	....
नाना	....
जेठ	....
सेठ	....
ठाकुर	....

योग्यता विस्तार

1. अहिल्याबाई की ही तरह भारत की अन्य वीरांगनाओं का परिचय कराने वाली कहानियाँ लाकर कक्षा में वाचन कीजिए।
2. वीरांगनाओं के चित्र लाकर कक्षा में लगाइए।
3. अहिल्याबाई के अलावा भारत की अन्य महिलाओं के नाम लिखिए, जिन्होंने देश के लिए महान कार्य किए।
4. अहल्या गौतम ऋषि की पत्नी का नाम है। किन्तु लोकमाता का नाम अहिल्या लिखा जाता है। 'अहल्या' शब्द का अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़िए।

नारी, शक्ति और सहनशीलता की प्रतीक है।